

वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा, बिहार

Article info

ABSTRACT

Article history:

Received Aug 18, 2026

Accepted Aug 28, 2026

Published Aug 31, 2026

Keywords:

भारतीय संस्कृति

मानवीय मूल्य

वैश्वीकरण

सामाजिक परिवर्तन

समाजशास्त्रीय अध्ययन

भारतीय संस्कृति का विकास हजारों वर्षों में हुआ है और यह धर्म, परंपरा, मूल्यबोध तथा सामाजिक आचरण का एक अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, तकनीकी क्रांति एवं बाजारीकरण की प्रक्रियाओं ने भारतीय समाज के सांस्कृतिक तानेबाने को गहराई से प्रभावित किया है। परिवार की संरचना में परिवर्तन, युवा पीढ़ी की बदलती जीवनशैली, परंपरागत मूल्यों के प्रति क्षीण आस्था तथा नई सामाजिक व्यवस्था का उदय - ये सभी परिघटनाएँ एक ऐसे समय में घटित हो रही हैं जब सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता एवं सामूहिकता जैसे भारतीय मानवीय मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता पुनः परीक्षण की माँग करती है। यह शोध-पत्र एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के परिवर्तनशील स्वरूप का विश्लेषण करता है। इसमें वैश्वीकरण की प्रक्रिया, परंपरा-आधुनिकता के द्वंद्व, पारिवारिक संस्थाओं में आने वाले बदलाव, शिक्षा व्यवस्था की भूमिका तथा सामाजिक संबंधों के नवीन आयामों को समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के माध्यम से विवेचित किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह है कि भारतीय मानवीय मूल्य केवल आध्यात्मिक या नैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि समकालीन सामाजिक विषमता, सांप्रदायिक विभाजन, पारस्परिक अविश्वास तथा पर्यावरणीय संकट के समाधान में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वैश्विक परिवेश में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की सार्थकता उनकी सामाजिक उपयोगिता, समसामयिक संदर्भों में पुनर्व्याख्या तथा मानवीय गरिमा को बनाए रखने की क्षमता पर अवलंबित है।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



Corresponding Author:

डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा

Email: nirpendra.kumarsinha@gmail.com

1. प्रस्तावना

वैश्वीकरण और बदलता भारतीय सामाजिक परिदृश्य

पिछली तीन दशकों में भारतीय समाज ने जो रूपांतरण देखा है, वह अभूतपूर्व और बहुआयामी है। 1991 की आर्थिक नीतियों के बाद जब भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकृत हुआ, तब से सामाजिक संरचना के हर स्तर पर परिवर्तन का सूत्रपात हुआ। डिजिटल क्रांति, उपभोक्तावादी संस्कृति, पश्चिमी जीवनशैली तथा बाजार-केंद्रित विचारधारा ने भारतीय समाज के पारंपरिक ढाँचे को चुनौती दी है। (शर्मा, 2023) नगरीय क्षेत्रों में व्यक्तिगत आकांक्षाएँ परिवारगत दायित्वों से आगे निकल गई हैं। संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं। विवाह के संस्कार बदल रहे हैं। पारिवारिक निर्णयों में स्वायत्तता की माँग बढ़ रही है। पड़ोस के सामाजिक संबंध शिथिल पड़ रहे हैं। ग्रामीण समाज

का एकात्म-भाव विखंडित हो रहा है। खेती छोड़कर लोग सेवा क्षेत्र की ओर प्रवाहित हो रहे हैं। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है क्योंकि वैश्वीकरण केवल आर्थिक परिघटना नहीं रह गई है; यह एक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में परिणत हो गई है। जब विदेशी पूँजी, प्रौद्योगिकी और विचार समाज में प्रविष्ट होते हैं, तब व्यक्तियों के मूल्य-बोध में मौलिक परिवर्तन हो जाता है। उपभोग को सफलता का प्रतीक माना जाने लगता है। व्यक्तिगत उन्नति सामूहिक कल्याण से अलग हो जाती है। पैसा जीवन के लक्ष्य के रूप में स्वीकृत हो जाता है।

भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की अवधारणा

भारतीय संस्कृति को समझने के लिए इसे धर्म, रीति-रिवाज और त्योहार तक सीमित मानना भ्रामक है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति एक सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है जो सामाजिक संबंधों, नैतिक व्यवहार, सामूहिक दायित्व और मानवीय मर्यादा को परिभाषित करती है। यह संस्कृति माता-पिता के प्रति आदर, भ्रातृत्व की भावना, अतिथि सत्कार की परंपरा, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति तथा समाज के हित में व्यक्तिगत त्याग - इन सभी को एक समन्वित मानदंड के रूप में प्रस्तुत करती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा विश्व को एक परिवार मानती है। (कुसुमाकर, 2016) यह सिद्धांत बताता है कि सीमाएँ मानव-निर्मित हैं और सार्वभौमिक मानवता सर्वोच्च है।

मानवीय मूल्य वे नैतिक सिद्धांत हैं जो व्यक्ति को मनुष्य बनाते हैं, पशु नहीं।

- सत्य—केवल वचन में नहीं, बल्कि आचरण में भी।
- अहिंसा—किसी भी प्राणी को शारीरिक, मानसिक अथवा आर्थिक क्षति न पहुँचाना।
- करुणा—दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानना और उसका निवारण करना।
- सहिष्णुता—भिन्न विचारों, धर्मों और परंपराओं को सम्मान देना।
- सहयोग—व्यक्तिगत हितों को समूह के कल्याण के साथ समन्वित करना।
- त्याग—अपने लिए कुछ न्योछावर करके सामाजिक हित की पूर्ति करना।
- न्याय—सभी को समान और निष्पक्ष व्यवहार देना। (जोशी, 2009)

ये मूल्य भारतीय दर्शन, धर्मग्रंथ, साहित्य और लोक-परंपराओं में गहराई से अंतर्निहित हैं। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद और राजा राम मोहन राय जैसे भारतीय विचारकों ने इन्हीं मूल्यों को अपने जीवन और कार्य का केंद्र बनाया। परंतु समकालीन भारतीय समाज इन मूल्यों को क्रमशः भूलता जा रहा है। आत्मकेंद्रित सोच बढ़ रही है। सामूहिक चेतना क्षीण हो रही है। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के पुनरुद्धार की आवश्यकता न केवल सांस्कृतिक, बल्कि सामाजिक रूप से अपरिहार्य हो गई है।

वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

प्रासंगिकता से तात्पर्य है: किसी विचार, मूल्य अथवा परंपरा का समकालीन समाज में जीवंत महत्व। क्या भारतीय संस्कृति और उसके मानवीय मूल्य आज के तेजी से बदलते समय में भी सार्थक हैं? यह प्रश्न अपने आप में जटिल है। परंतु उत्तर निर्विवाद है। यदि परिवार के प्रत्येक सदस्य केवल अपने सुख के लिए काम करे, परिवार टूट जाता है। यदि कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी केवल अपनी परीक्षा की चिंता करे, शिक्षा का उद्देश्य विफल हो जाता है। यदि समाज के हर व्यक्ति का लक्ष्य केवल व्यक्तिगत संपत्ति संचय हो, तो सामाजिक संबंध नष्ट हो जाते हैं। हिंसा, अपराध, विश्वासघात और संघर्ष समाज को तबाह कर देते हैं। (मनीषा, 2018) इसलिए सत्य, न्याय, सहिष्णुता और सेवा जैसे मानवीय मूल्य न केवल पहले जितने ही प्रासंगिक हैं, बल्कि आज के संकटकाल में और भी अधिक आवश्यक हो गए हैं। भारतीय संस्कृति को समझना और उसे जीवन में अंगीकार करना आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

यह शोध-पत्र भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की बहुआयामी प्रासंगिकता को समाजशास्त्रीय विश्लेषण के माध्यम से प्रतिपादित करता है। समाजशास्त्र समाज के कार्य-कलाप, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक प्रक्रियाओं और सामाजिक परिवर्तन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझता है। इस अध्ययन में भारतीय संस्कृति के परिवर्तनशील स्वरूप, वैश्वीकरण की प्रभाविता, परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व, पारिवारिक संस्थाओं में रूपांतरण, शिक्षा-प्रक्रिया में मूल्य-निर्माण की भूमिका तथा सामाजिक सुसंगतता में भारतीय मानवीय मूल्यों का योगदान—इन

सभी विषयों का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्य एक अस्पष्ट अतीत नहीं हैं, बल्कि वे भविष्य के समाज-निर्माण की एक सशक्त बुनियाद हो सकते हैं।

2. शोध के उद्देश्य

1. वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों में हो रहे सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
2. समकालीन भारतीय समाज में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता तथा सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करना।

3. अनुसंधान पद्धति

यह शोध-पत्र द्वितीयक स्रोतों के समावेशी विश्लेषण पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय और वैश्विक समाजशास्त्रीय साहित्य का गहन अवलोकन किया गया है। प्रमुख भारतीय समाजशास्त्रियों: एम. एन. श्रीनिवास, योगेन्द्र सिंह, डी. पी. मुखर्जी तथा जी. एस. घुर्ये के विचारों का व्यवस्थित संदर्भन किया गया है। ये समाजशास्त्री भारतीय समाज, परंपरा, आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन को गहन विश्लेषण के माध्यम से समझते हैं। श्रीनिवास ने 'संस्कृतिकरण' की अवधारणा प्रस्तुत की, जो दर्शाती है कि भारतीय समाज में परिवर्तन की समचालनीय प्रक्रिया है। योगेन्द्र सिंह ने भारतीय संस्कृति के आधुनिकीकरण पर विस्तृत लेखन किया है और यह प्रदर्शित किया है कि भारत ने पश्चिमी तत्वों को अपनी सांस्कृतिक परिधि में कैसे अंगीकार किया। डी. पी. मुखर्जी ने भारतीय परंपरा के सामाजिक स्रोतों का गहन विश्लेषण किया है। जी. एस. घुर्ये ने भारतीय संस्कृति की संरचना और विशेषताओं को परिभाषित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्री रोलैंड रॉबर्टसन की वैश्वीकरण संबंधी अवधारणाएँ इस शोध-पत्र में भारतीय संदर्भ में प्रयुक्त की गई हैं। शोध-पद्धति 'विषय-वस्तु विश्लेषण' पर आधारित है, जिसमें उपलब्ध अकादमिक ग्रंथ, शोध-पत्र और विद्वतापूर्ण लेख का विश्लेषण किया गया है। भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को सामाजिक परिवर्तन, वैश्वीकरण की गतिविधि, परंपरा-आधुनिकता की अंतःक्रिया तथा सामाजिक संस्थाओं (परिवार, शिक्षा, विवाह, सामूहिकता) के परिवर्तनशील संदर्भों में समीक्षित किया गया है। शोध की पद्धति व्याख्यात्मक और तुलनात्मक है। यह बदलते भारतीय सामाजिक परिदृश्य में भारतीय मानवीय मूल्यों के सामाजिक अर्थ, उनकी सांस्कृतिक उपादेयता और समकालीन सामाजिक समस्याओं के समाधान में उनकी संभावनाओं को समझता है। शोध की सीमा यह है कि इसमें प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार अथवा क्षेत्र-अध्ययन नहीं किए गए हैं। शोध केवल द्वितीयक साहित्य पर आधारित है। परंतु यह सीमा अध्ययन को विश्वसनीयता से वंचित नहीं करती, क्योंकि द्वितीयक स्रोतों में पर्याप्त साक्ष्य और विश्लेषण है। अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता को एक सुसंगत समाजशास्त्रीय ढाँचे में प्रस्तुत करना है।

4. भारतीय संस्कृति: अवधारणा, स्वरूप और विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति की गहन समझ के लिए इसकी ऐतिहासिक गहराई और वैचारिक व्यापकता को समझना आवश्यक है। 'संस्कृति' शब्द संस्कार, परिष्कार और सामाजिक आचरण के समन्वित रूप को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति का जन्म सिंधु घाटी की सभ्यता में हुआ, जो लगभग 4,500 वर्ष पूर्व समृद्ध थी। वैदिक काल में इसे दार्शनिक गहनता मिली। पश्चात्कालीन युगों में यह विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के साथ अंतःक्रिया करते हुए और भी समृद्ध हुई। भारतीय संस्कृति की अद्वितीय विशेषता यह है कि इसने विभिन्न आक्रमणों, शासन-परिवर्तनों और बाह्य दबावों को झेलते हुए भी अपनी मूल पहचान को बनाए रखा है। (कुमार एवं कठेरिया, 2026)

- भारतीय संस्कृति की प्रथम और सबसे प्रमुख विशेषता है **सांस्कृतिक विविधता**। भारत में प्रत्येक क्षेत्र की अपनी भाषा है: उत्तर में हिंदी, दक्षिण में तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम, पूर्व में बंगाली और असमिया, पश्चिम में गुजराती और मराठी। भाषाओं की यह विविधता धार्मिक प्रथाओं, खान-पान, वस्त्र-विधान और सांस्कृतिक उत्सवों में भी प्रतिबिंबित होती है। उत्तर में दिवाली और होली मनाई जाती है; दक्षिण में पोंगल और तैपुसम; पूर्व में दुर्गा पूजा और ऋग्विष्णु; पश्चिम में नवरात्रि और गरबा। परंतु इस अपार

विविधता के बीच एक गहरी समानता भी है। सभी जगह परिवार को पवित्र माना जाता है, वृद्धजनों को सम्मान दिया जाता है, अतिथि को देवता का दर्जा दिया जाता है। (शर्मा, सुमन, 2023) यह विविधता-में-एकता भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।

- दूसरी विशेषता है **सांस्कृतिक निरंतरता**। भारतीय संस्कृति परिवर्तनशील है, परंतु अपनी मूल विशेषताओं को संरक्षित करती है। यह संस्कृति अत्यंत लचीली है। बौद्ध धर्म आया, यह हिंदू धर्म के साथ समन्वित हो गया। इस्लाम आया, भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गया। इसीलिए भारत में अलग-अलग धर्मों के मानने वाले एक साथ रहते हैं। ब्रिटिश शासन ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की चेष्टा की, परंतु भारतीय संस्कृति न केवल जीवित रही, बल्कि अपने मूल तत्वों के साथ नई पहचान भी बनाई। (घोष, 2019) यह निरंतरता ही भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी ताकत है।
- तीसरी विशेषता है **समन्वयशील दृष्टिकोण**। भारतीय संस्कृति विभिन्न विचारों, दर्शनों और परंपराओं को एक साथ स्वीकार करती है। हिंदू दर्शन में छः मुख्य दार्शनिक स्कूल हैं, जिनमें से प्रत्येक भिन्न विचार प्रस्तुत करते हैं, परंतु सभी को समान रूप से सम्मान दिया जाता है। भारतीय संस्कृति में कला, संगीत, नृत्य, साहित्य, विज्ञान और धर्म—सभी को समान मूल्य दिया जाता है। 'बहुवाद' (Pluralism) की यह अवधारणा कि बहुत सारे मत सम्मानजनक हो सकते हैं, भारतीय चिंतन की विशिष्टता है। (शर्मा, आशुतोष, 2025)
- चौथी विशेषता है **सहिष्णुता और सामाजिक समावेशन**। भारतीय संस्कृति में अलग-अलग धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग सदियों से साथ-साथ रहते आए हैं। संघर्ष जरूर हुए हैं, परंतु भारतीय समाज की मूल प्रवृत्ति समावेशी रही है। गौतम बुद्ध, महावीर, जीसस और पैगंबर मुहम्मद—सभी भारत में आए और भारतीय समाज ने सभी को अपनाया। यह सहिष्णुता ही भारतीय संस्कृति के दीर्घजीविता का कारण है।

5. भारतीय संस्कृति में मानवीय मूल्यों की आधारभूमि

भारतीय संस्कृति के केंद्र में नैतिक मूल्य हैं। ये मूल्य धर्मग्रंथों, दार्शनिक परंपराओं, जनकथाओं और सामाजिक प्रथाओं में संरक्षित हैं।

- सत्य:** महाभारत में कहा गया है - 'सत्यमेव जयते' (सत्य की ही जीत होती है)। सत्य केवल सच बोलना नहीं है, बल्कि सत्य के अनुसार जीवन जीना है। यह भारतीय चिंतन में सर्वोच्च नैतिक मान्यता है। किसी भी परिस्थिति में, भले ही झूठ लाभजनक हो, सत्य को त्यागना अधर्म माना जाता है।
- अहिंसा:** 'अहिंसा परमो धर्मः' - अहिंसा परम धर्म है। यह केवल शारीरिक हिंसा न करने तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आर्थिक क्षति न पहुँचाने को भी शामिल करता है। महात्मा गाँधी ने इसी अहिंसा के सिद्धांत पर भारत को आजाद कराया। यह सिद्धांत बताता है कि शक्तिशाली होकर भी कमजोर को पीड़ा न देना, यही सच्ची शक्ति है।
- करुणा:** दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानना और उसका निवारण करना। भारतीय महाकाव्यों में राम का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि वे करुणामय थे। वे अपने पिता की बात मानकर वनवास गए। वे राक्षसों को भी क्षमा करते थे। यह करुणा ही उन्हें महान बनाती है।
- सहिष्णुता:** दूसरों के विचारों, धर्मों और परंपराओं को सम्मान देना। भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि सत्य एक नहीं, अनेक रूपों में हो सकता है। 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' - सत्य एक है, परंतु बुद्धिमान लोग इसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं। (चौधुरी, 2024) यह सहिष्णुता ही भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है।
- सहयोग:** व्यक्तिगत हितों को सामूहिक कल्याण के साथ समन्वित करना। भारतीय संस्कृति में परिवार, गाँव और समाज को एक जीवंत जीव माना जाता है। हर सदस्य का दायित्व है कि वह पूरे शरीर के कल्याण में योगदान दे। यह सहयोग की भावना ही भारतीय ग्रामीण समाज को शताब्दियों तक एकबद्ध रखती है।

- **त्याग:** अपने लिए कुछ न्योछावर करके सामूहिक हित की पूर्ति करना। भारतीय धर्मग्रंथों में त्याग को सर्वोच्च कर्म माना गया है। दान देना, सेवा करना, बलिदान देना: ये सभी त्याग के विभिन्न रूप हैं। यह त्याग की भावना ही भारतीय समाज में नायकों और संतों को जन्म देती है।
- **न्याय:** सभी को समान और निष्पक्ष व्यवहार देना। भारतीय धर्मग्रंथों में न्याय को समाज की नींव माना गया है। महाभारत में कृष्ण युधिष्ठिर को न्याय की महत्ता समझाते हैं। यह न्याय ही समाज को सुव्यवस्थित रखता है।

ये मानवीय मूल्य अलग-अलग नहीं हैं, बल्कि आपस में जुड़े हुए हैं। सत्य के बिना न्याय संभव नहीं है। अहिंसा के बिना करुणा अधूरी है। सहिष्णुता के बिना सहयोग असंभव है। ये सभी मूल्य मिलकर एक सुसंगत, न्यायसंगत और करुणामय समाज का निर्माण करते हैं।

6. परंपरा, आधुनिकता और भारतीय सामाजिक परिवर्तन

समाजशास्त्रीय विश्लेषण से पता चलता है कि परंपरा और आधुनिकता को परस्पर विरोधी मानना गलत है। इन दोनों के बीच एक जटिल द्वंद्व और अंतःक्रिया है। भारतीय समाज ने इस द्वंद्व को संतुलित तरीके से संभाला है।

एम. एन. श्रीनिवास की 'संस्कृतिकरण' की अवधारणा इसे स्पष्ट करती है। (श्रीनिवास, 1966) श्रीनिवास ने दिखाया कि निचली जातियाँ ऊँची जातियों के रीति-रिवाज को अपनाती हैं। लेकिन यह केवल नकल नहीं है; यह एक सामाजिक गतिविधि है जिसके माध्यम से समाज में पुनर्गठन होता है। यह परंपरा को तोड़ता नहीं, बल्कि पुनर्व्याख्या करता है। (कुमारी एवं तिवारी, 2025) योगेन्द्र सिंह ने भारतीय समाज के 'संदर्भवादी आधुनिकीकरण' की बात की है। (योगेन्द्र सिंह, 1986) उनके अनुसार, भारत ने पश्चिमी तकनीक, शिक्षा और आधुनिक विचारों को स्वीकार किया, परंतु उन्हें भारतीय संदर्भ में ढाल लिया। (प्रदीप कुमार, 2022) भारतीय समाज ने विद्यालय, विश्वविद्यालय, अस्पताल और कारखाने तो पश्चिमी तरीके से बनाए, परंतु घर में परिवार की परंपरा को बनाए रखा।

वास्तविकता यह है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण एक स्तरीकृत प्रक्रिया है। शहरी, शिक्षित, उच्च-आय वाले परिवार अधिक आधुनिक हैं। ग्रामीण, अशिक्षित, निम्न-आय वाले परिवार परंपरा को अधिक मजबूती से पकड़ते हैं। परंतु यह अलगाववादी नहीं है। शहरी परिवार के सदस्य भी त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान और परिवारगत परंपराओं को मनाते हैं। ग्रामीण परिवार भी आजकल मोबाइल फोन, स्कूटर और टेलीविजन रखते हैं। यह सांस्कृतिक संकर-पण है: न पूरी तरह परंपरागत, न पूरी तरह आधुनिक। (सुरयावंशी, 2012)

लड़की आजकल कॉलेज में जाती है, विश्वविद्यालय में पढ़ती है, नौकरी करती है (आधुनिकता)। परंतु घर पर वह माता-पिता को सम्मान देती है, पारिवारिक काम में हाथ बँटाती है, बड़ों की बात सुनती है (परंपरा)। पुरुष कंप्यूटर पर काम करता है, अंग्रेजी बोलता है, बाहर की दुनिया से जुड़ा रहता है (आधुनिकता)। परंतु घर की जिम्मेदारी महसूस करता है, परिवार के निर्णयों में भाग लेता है (परंपरा)। यह द्वैत ही भारतीय समाज की विशेषता है। परंतु जब यह संतुलन बिगड़ता है, तो समस्याएँ पैदा होती हैं। जब आधुनिकता परंपरा को पूरी तरह खत्म करने लगती है, तो सामाजिक विघटन होता है। जब परंपरा आधुनिकता को पूरी तरह दबा देती है, तो समाज पिछड़ जाता है। समाधान तो दोनों का समन्वय है।

7. वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति

वैश्वीकरण एक बहु-आयामी परिघटना है। यह केवल आर्थिक व्यापार तक सीमित नहीं है; यह सांस्कृतिक, सामाजिक, तकनीकी और विचारात्मक सीमाओं को तोड़ता है। रोलैंड रॉबर्टसन की वैश्वीकरण संबंधी अवधारणा इसे स्पष्ट करती है। (रॉबर्टसन, 2000) रॉबर्टसन के अनुसार, विश्व एक ऐसी जगह बन रहा है जहाँ सभी समाज एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं। कोई भी समाज अलग-थलग नहीं रह सकता। सभी को विश्व-समुदाय का भाग मानना होगा।

भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव गहरा है।

- पहला प्रभाव है **जीवन-शैली में क्रांतिकारी परिवर्तन**। आजकल की युवा पीढ़ी पश्चिमी कपड़े पहनती है: जीन्स, शर्ट, टॉप। भोजन के मामले में भी बदलाव हुआ है। पिज्जा, बर्गर, चाइनीज खाना, इतालवी पास्ता: ये सभी अब भारतीय शहरों में आम हो गए हैं।

(शुक्ला एवं पाण्डेय, 2023) यह सिर्फ कपड़ों और खाने की बात नहीं है; इसके पीछे एक संपूर्ण मानसिकता है। लोग अपने आप को 'आधुनिक', 'विश्वनागरिक', 'उन्नत' मानने लगते हैं। पारंपरिक कपड़े पहनना 'पुरानापन' माना जाता है।

- दूसरा प्रभाव है **पारिवारिक संरचना में परिवर्तन**। भारतीय परिवार परंपरागत रूप से संयुक्त होते थे। तीन पीढ़ियाँ - दादा-दादी, माता-पिता और बच्चे - एक छत के नीचे रहते थे। एक परिवार की आय सबकी जरूरतें पूरी करती थी। लेकिन अब यह परिवार विघटित हो रहे हैं। नौकरी के लिए लोगों को दूर शहरों में जाना पड़ता है। (श्रीवास्तव, 2026) बहु-आय वाली परिवार की जरूरत पड़ी है, इसलिए महिलाएँ भी नौकरी करने लगीं। परिणामस्वरूप, परिवार छोटे हो गए हैं: माता-पिता और एक-दो बच्चे। बुजुर्गों को अकेलापन का सामना करना पड़ता है। बच्चों को दादा-दादी का प्यार और सीख नहीं मिलता। यह एक सामाजिक नुकसान है।
- तीसरा प्रभाव है **सामाजिक संबंधों में कमजोरी**। पड़ोसियों के रिश्ते खत्म हो गए हैं। पहले गाँव में सब एक-दूसरे को जानते थे। शहर में भी पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध होते थे। अब शहरों में लोग अपने फ्लैट में बंद रहते हैं। पड़ोसी का नाम तक नहीं जानते। यह सामाजिक विच्छेदन है। समाज का मतलब सिर्फ 'अन्य लोग' नहीं; समाज तो एक जीवंत संगठन है, जहाँ लोग आपस में जुड़े होते हैं।
- चौथा प्रभाव है **खपत संस्कृति का विकास**। वैश्वीकरण के साथ ही बाजारवाद आया है। अब लोग सिर्फ जरूरत की चीजें नहीं खरीदते; अनावश्यक चीजें भी खरीदते हैं। ब्रांडेड कपड़े, महँगे मोबाइल फोन, लेटेस्ट गैजेट, विदेशी यात्रा: सब कुछ खरीदने की इच्छा होती है। विज्ञापनों का असर है कि लोग सोचते हैं कि 'यह ब्रांड खरीदने से मैं आधुनिक हो जाऊँगा'। यह भ्रम है। खपत को सफलता का प्रतीक माना जाने लगा है। (मनीषा, 2018) लेकिन भारतीय संस्कृति में सादगी को गुण माना जाता था। महात्मा गाँधी खदूर पहनते थे, पर वे दुनिया के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। आजकल तो लोग सोचते हैं कि बिना खर्च किए जीवन अधूरा है।
- पाँचवाँ प्रभाव है **सांस्कृतिक परिवर्तन**। वैश्वीकरण से एक ओर तो भारतीय संस्कृति को विश्व में मान्यता मिली है। योग, आयुर्वेद, भारतीय खाना, भारतीय संगीत: ये सब अब विदेशों में भी लोकप्रिय हो गए हैं। यह गर्व की बात है। लेकिन दूसरी ओर, स्थानीय संस्कृतियाँ भी खतरे में हैं। भारतीय भाषाएँ क्षीण हो रही हैं। नई पीढ़ी को अपनी भाषा, अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति के बारे में पता नहीं है। यह एक खतरनाक संकेत है। (सिंह, गीता, 2021)

8. उपभोक्तावाद, तकनीकी विकास और मानवीय मूल्यों की चुनौतियाँ

समकालीन भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा एक उपभोक्तावादी मानसिकता से ग्रस्त है। उपभोक्तावाद का अर्थ है, माल के क्रय-विक्रय को जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानना। जब यह प्रवृत्ति अत्यधिक हो जाती है, तब समस्या शुरू होती है। उपभोक्तावाद सिर्फ खरीद-फरोख्त नहीं है; यह एक मानसिकता है जिसमें व्यक्ति की पहचान उसके पास की चीजों से जुड़ी हो जाती है। जो व्यक्ति महँगा मोबाइल फोन खरीद सकता है, वह 'बेहतर' माना जाता है। जो व्यक्ति विदेश की यात्रा कर सकता है, वह 'सफल' माना जाता है। यह भारतीय संस्कृति की 'सरलता' के सिद्धांत के विरुद्ध है।

- तकनीकी विकास को उपभोक्तावाद से जोड़कर देखने की जरूरत है। डिजिटल प्रौद्योगिकी - फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, टिकटॉक ने सामाजिक संबंधों को बदल दिया है। ये माध्यम तो सूचना प्रसार के लिए बहुत उपयोगी हैं, परंतु इन्होंने एक 'दिखावा संस्कृति' को भी जन्म दिया है। लोग अपनी बेहतरीन तस्वीर सोशल मीडिया पर लगाते हैं, काल्पनिक जीवन दिखाते हैं। 'लाइक्स' के लिए झूठ बोलते हैं, अतिशयोक्ति करते हैं। यह भारतीय संस्कृति के 'सत्य' और 'ईमानदारी' के मूल्यों के खिलाफ है। (वर्मा, ए. के., 2021)
- दूसरी ओर, **व्यक्तिवाद** का बढ़ता हुआ प्रभाव चिंता का विषय है। 'अपने आप को पहले करो', 'अपने सपने पूरे करो', 'अपने लिए जियो' ये नारे हर जगह सुनाई देते हैं। ये नारे गलत नहीं हैं, परंतु जब व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा परिवारगत दायित्वों को भूल जाती है,

तब समस्या पैदा होती है। भारतीय संस्कृति में व्यक्ति समाज का अंग है, अलग चीज नहीं है। लेकिन आजकल के नव-उदारवादी (Neoliberal) विचार व्यक्ति को समाज से अलग मानते हैं। यह अलगाववाद समाज को विघटित कर रहा है।

- तीसरी समस्या है **अत्यधिक प्रतिस्पर्धा**। आजकल हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा है, स्कूल में अच्छे अंक के लिए, कॉलेज में प्रवेश के लिए, नौकरी के लिए, पदोन्नति के लिए, साथ ही सामाजिक मर्यादा के लिए भी। प्रतिस्पर्धा स्वयं में बुरी नहीं है; यह प्रेरणा देती है। परंतु जब प्रतिस्पर्धा सहानुभूति को खत्म कर देती है, जब लोग एक-दूसरे को पराजित करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं, तब यह विनाशकारी हो जाती है। भारतीय संस्कृति 'सहयोग' की भावना सिखाती है, न कि 'प्रतिद्वंद्विता' की। (सिंह, गीता, 2021)

परंतु क्या इन सब समस्याओं से बचा जाना संभव है? क्या हमें तकनीकी विकास को अस्वीकार कर देना चाहिए? नहीं। समाधान यह है कि हम इन नई शक्तियों को सचेतनता के साथ व्यवहार करें। तकनीकी विकास को अपनाएँ, परंतु अपने मानवीय मूल्यों को भी बनाए रखें। इंटरनेट का उपयोग करें, पर सच्चाई के साथ। अपने सपने पूरे करें, पर परिवार की भी परवाह करें। प्रतिस्पर्धा करें, पर सहानुभूति को न भूलें। यह संतुलन ही भारतीय समाज की रक्षा कर सकता है।

9. परिवार और सामाजिक संबंधों में मानवीय मूल्यों की भूमिका

परिवार भारतीय समाज की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। यह केवल एक आवास नहीं है, बल्कि एक सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक इकाई है। परंपरागत भारतीय परिवार में प्रेम, आदर, कर्तव्य और सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत काम करते हैं। बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, स्त्री के प्रति सम्मान, और सभी के प्रति न्यायसंगत व्यवहार, ये सब मूल्य परिवार को चलाते हैं।

लेकिन आधुनिक परिवार में क्या बदलाव आया है? प्रत्येक सदस्य अपने-अपने काम में व्यस्त है। पिता दफ्तर में, माता बाहर काम करती है, बच्चे स्कूल जाते हैं। घर पर सब बँटे-बिखरे हुए हैं। (श्रीवास्तव, 2026) खाना एक साथ खाना दुर्लभ हो गया है। बातचीत कम हो गई है। बुजुर्गों के सलाह का मूल्य कम हो गया है। यह परिवार की संरचना में एक गहरा बदलाव है, जिसके गहरे सामाजिक परिणाम हैं।

परंतु यहाँ पर मानवीय मूल्य फिर से प्रासंगिक हो जाते हैं। अगर परिवार के सदस्य एक-दूसरे को प्रेम से देखें, एक-दूसरे की बात सम्मान से सुनें, कठिन समय में एक-दूसरे के साथ रहें, तब भले ही परिवार का शारीरिक ढाँचा बदल जाए, उसकी आत्मा बची रह सकती है। एक माता-पिता के घर से दूर नौकरी करते हैं, परंतु वे हर हफ्ते अपने माता-पिता से बात करते हैं, छुट्टियों में घर जाते हैं। यह प्रेम और कर्तव्य की भावना ही परिवार को जीवंत रखती है।

सामाजिक संबंध भी इसी तरह हैं। पड़ोस के संबंध कमजोर हो गए हैं, परंतु अगर हम पड़ोसियों के साथ सहानुभूति दिखाएँ, एक-दूसरे के खुशियों में भाग लें, संकट के समय सहायता करें, तब पड़ोस के रिश्ते फिर से मजबूत हो सकते हैं। यह सामूहिकता की भावना ही सामाजिक सुसंगतता की कुंजी है। (उपाध्याय, 2018)

10. शिक्षा, समाजीकरण और मूल्य-निर्माण

शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है? क्या यह केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना है? नहीं। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान के साथ-साथ चरित्र-निर्माण, नैतिकता का विकास, और सामाजिक दायित्व की समझ भी शामिल है।

समाजीकरण: वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे समाज का सदस्य बनते हैं। जब बच्चा घर में माता-पिता के साथ रहता है, तब समाजीकरण शुरू होता है। वह सीखता है कि दूसरों के साथ कैसे रहना है, दूसरों से प्रेम कैसे करना है, दूसरों को सम्मान कैसे देना है। फिर स्कूल में जाकर वह बड़े समुदाय का भाग बनता है। शिक्षक, साथी छात्र, और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के माध्यम से उसका समाजीकरण आगे बढ़ता है। (कुसुमाकर, 2016)

मूल्य-निर्माण: वह प्रक्रिया है जिसमें बच्चों को सही और गलत में अंतर सिखाया जाता है। सत्य क्या है, झूठ क्या है। न्याय क्या है, अन्याय क्या है। सहानुभूति क्या है, स्वार्थ क्या है। ये सब सिद्धांत बचपन में ही सिखाए जाने चाहिए। भारतीय परंपरा में गुरुकुल में विद्यार्थियों को

शिक्षा के साथ आचरण भी सिखाया जाता था। राम और कृष्ण को वशिष्ठ और द्रोणाचार्य ने केवल विद्या ही नहीं, बल्कि जीवन के सिद्धांत भी सिखाए। (जोशी, 2009)

लेकिन आजकल की शिक्षा व्यवस्था में क्या है? अंग्रेजी, गणित, विज्ञान - ये सब विषय पढ़ाए जाते हैं। परीक्षा में अच्छे अंक के लिए बच्चों को दबाया जाता है। परंतु सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति: इन मूल्यों को सिखाने पर ध्यान नहीं दिया जाता। (वर्मा, 2021) यह एक बड़ी कमी है। शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। परंतु यह 'धर्म शिक्षा' नहीं होनी चाहिए। यह सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा होनी चाहिए। सत्य हर धर्म में अच्छा है। झूठ हर धर्म में बुरा है। अहिंसा हर समाज के लिए आवश्यक है। यह शिक्षा तो सभी बच्चों को दी जानी चाहिए, चाहे वे किसी भी धर्म के हों।

11. वैश्विक समाज में भारतीय मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

आज का विश्व अनेक संकटों से जूझ रहा है। ये समस्याएँ सिर्फ आर्थिक या राजनीतिक नहीं हैं; ये गहराई से मानवीय हैं। वैश्विक समाज की मुख्य समस्याएँ क्या हैं?

- **प्रथम समस्या: असमानता।** दुनिया में अमीरी और गरीबी की खाई लगातार बढ़ रही है। कुछ लोगों के पास असीम संपत्ति है, कुछ के पास जीवन जीने का कोई साधन नहीं है। यह भारतीय संस्कृति के **न्याय** और **समानता** के सिद्धांत के विरुद्ध है। भारतीय संस्कृति में सब को समान माना जाता है। राजा और रंक, सेठ और मजदूर - सब में एक ही परमात्मा है। यह विचार असमानता को खत्म कर सकता है।
- **दूसरी समस्या: हिंसा।** विश्व भर में अलग-अलग कारणों से हिंसा हो रही है। सीरिया, अफगानिस्तान, पैलेस्टाइन - कहीं भी शांति नहीं है। आतंकवाद, आपराधिकता, घरेलू हिंसा - हर जगह हिंसा है। भारतीय संस्कृति का **अहिंसा** का सिद्धांत इसका समाधान कर सकता है। महात्मा गाँधी ने दिखाया कि अहिंसा से भी बड़ी शक्तियों को परास्त किया जा सकता है। यदि दुनिया अहिंसा को अपनाए, तब शांति संभव है।
- **तीसरी समस्या: सांप्रदायिक विभाजन।** धर्मों के नाम पर, मतों के नाम पर दुनिया बँटी हुई है। हिंदू-मुस्लिम, ईसाई-यहूदी - सब एक-दूसरे से अलग हो गए हैं। कट्टरता बढ़ रही है। यहाँ पर **सहिष्णुता** की जरूरत है। भारतीय संस्कृति में यह माना जाता है कि सत्य के कई रूप हो सकते हैं। अलग-अलग धर्मों में भी अच्छाई है। यह विचार सांप्रदायिक विभाजन को कम कर सकता है।
- **चौथी समस्या: प्रदूषण और पर्यावरण।** मनुष्य ने पृथ्वी को नष्ट किया जा रहा है। वन काटे जा रहे हैं, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जलवायु परिवर्तन हो रहा है। यहाँ पर **सह-अस्तित्व** की अवधारणा जरूरी है। भारतीय संस्कृति में माना जाता है कि सभी प्राणी, सभी वृक्ष, सभी नदियाँ - सब हमारे परिवार के सदस्य हैं। हमें उनके साथ सह-अस्तित्व में रहना चाहिए, उन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

भारतीय मानवीय मूल्य इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं:

- **सहयोग** से वैश्विक समस्याओं का समाधान संभव है। एक देश अकेले में कुछ नहीं कर सकता; सब को मिलकर काम करना होगा।
- **करुणा** से गरीबों और दलितों की सहायता की जा सकती है। अमीर देशों को गरीब देशों की सहायता करनी चाहिए।
- **सत्य** से भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी को खत्म किया जा सकता है। पारदर्शिता से भरोसा बढ़ता है।

भारतीय संस्कृति सिर्फ भारत के लिए नहीं है; यह सार्वभौमिक है। इसके मूल्य विश्व-मानव के लिए लागू हैं। यदि विश्व भारतीय संस्कृति के ये मूल्यों को अपनाए, तो एक शांतिपूर्ण, न्यायसंगत और सुंदर दुनिया बन सकती है।

12. समाजशास्त्रीय विश्लेषण

अब तक किए गए विश्लेषण को एक समन्वित समाजशास्त्रीय ढाँचे में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

- **संस्कृति सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करती है।** जब लोग सत्य, न्याय और सहिष्णुता के मूल्यों में विश्वास करते हैं, तब वे ईमानदारी से काम करते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं, विभिन्न विचारों को सुनते हैं। संस्कृति लोगों को एक नैतिक ढाँचा प्रदान करती है, जिसके अंदर वे अपना आचरण तय करते हैं। (चौधुरी, 2024)
- **मूल्य सामाजिक संबंधों को आकार देते हैं।** परिवार में जब प्रेम और सम्मान के मूल्य मौजूद हों, तब परिवार मजबूत रहता है। समाज में जब न्याय और समानता के मूल्य मौजूद हों, तब सामाजिक शांति बनी रहती है। मूल्य ही सामाजिक बंधन हैं।
- **वैश्वीकरण सामाजिक संरचनाओं को पुनर्गठित करता है।** वैश्वीकरण से पहले, भारतीय समाज दो प्रमुख संस्थाओं - परिवार और धर्म पर केंद्रित था। वैश्वीकरण के बाद, आर्थिक संस्थाएँ (कारखाने, कंपनियाँ) और शैक्षणिक संस्थाएँ अधिक महत्वपूर्ण हो गईं। यह संरचनात्मक परिवर्तन सामाजिक संबंधों को बदल देता है।
- **परंपरा और आधुनिकता के बीच अंतःक्रिया सामाजिक परिवर्तन को धीमा करती है।** पूरी तरह आधुनिकीकरण से समाज में अराजकता हो सकती है। परंतु परंपरा के साथ आधुनिकता को ढालने से परिवर्तन धीरे-धीरे, संतुलित तरीके से होता है। (श्रीनिवास, 1966) भारतीय समाज इसका एक सफल उदाहरण है। (प्रदीप कुमार, 2022)
- **भारतीय समाज में सांस्कृतिक विविधता सामाजिक समृद्धि का स्रोत है।** विविधता से समाज को विभिन्न दृष्टिकोण, विभिन्न ज्ञान और विभिन्न अनुभव मिलते हैं। एक एकीकृत समाज विकास नहीं कर सकता। भारतीय समाज की विविधता ही उसकी ताकत है। (शर्मा, 2023) लेकिन वैश्वीकरण एक 'समरूपता' ला रहा है, सब जगह एक जैसी संस्कृति। यह विविधता को खतरे में डाल रहा है।
- **सामाजिक परिवर्तन के बीच सांस्कृतिक निरंतरता कैसे संभव है?** यह एक महत्वपूर्ण सवाल है। भारतीय समाज के पास इसका उत्तर है - सांस्कृतिक लचीलापन। भारतीय संस्कृति लचीली है, पर कमजोर नहीं। यह नई चीजों को ग्रहण करती है, परंतु अपनी बुनियाद नहीं भूलती। (घोष, 2019) यह लचीलापन बनाए रखना आवश्यक है।
- **स्थानीय संस्कृति और वैश्विक संस्कृति के बीच संतुलन कैसे हो?** भारत की समस्या यह है कि या तो लोग पूरी तरह वैश्विक हो जाते हैं और अपनी संस्कृति भूल जाते हैं (पश्चिमीकरण), या पूरी तरह स्थानीय रहते हैं और वैश्विक दुनिया से कट जाते हैं (परंपरावाद)। समाधान तो दोनों का संतुलन है। अपनी संस्कृति को गर्व से धारण करते हुए, वैश्विक समुदाय के साथी बनना। यह 'संदर्भवादी आधुनिकीकरण' ही सही रास्ता है। (योगेन्द्र सिंह, 1986)
- **मानवीय मूल्यों की समकालीन पुनर्व्याख्या क्यों आवश्यक है?** समय बदलता है, समाज बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं। मूल्य अपने आप में स्थिर हैं, परंतु उनकी व्याख्या बदलनी पड़ती है। 'सत्य' का अर्थ पहले गाँव में रहते हुए 'अपने गाँववासियों से सच बात करना' था। अब जब लोग विश्व भर से जुड़े हैं, तब 'सत्य' का अर्थ 'सभी से ईमानदारी से बात करना' है। 'सहयोग' का अर्थ पहले 'परिवार के साथ काम करना' था। अब यह 'समाज, देश और विश्व के साथ काम करना' है। मूल्य वही हैं, परंतु उनके अनुप्रयोग के क्षेत्र बदल गए हैं।

13. समकालीन चुनौतियाँ और संभावनाएँ

भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के समक्ष आज कौन-कौन सी चुनौतियाँ हैं, और उन्हें पार करने की क्या संभावनाएँ हैं?

प्रमुख चुनौतियाँ:

1. **उपभोक्तावाद की आक्रामकता:** खरीद-फरोख्त और भौतिक संपत्ति को जीवन का लक्ष्य बना दिया गया है।
2. **व्यक्तिवादी मानसिकता:** 'स्व' केंद्रित जीवन से सामूहिकता का हास हो रहा है।
3. **डिजिटल विभाजन:** सोशल मीडिया पर झूठ और दिखावा बढ़ रहा है।
4. **पीढ़ीगत अंतराल:** बुजुर्ग और युवा के बीच समझ की कमी बढ़ रही है।

5. **धार्मिक कट्टरता:** सहिष्णुता और सम्मान की जगह कट्टरवाद ले रहा है।

6. **शिक्षा का संकट:** नैतिक शिक्षा का अभाव है।

संभावनाएँ और समाधान:

1. **शिक्षा की परिवर्तनकारी भूमिका:** यदि स्कूलों में मानवीय मूल्य सिखाए जाएँ, तो भविष्य की पीढ़ी बेहतर हो सकती है। शिक्षा ही परिवर्तन का माध्यम है। (वर्मा, 2021) भारत ने 'नई शिक्षा नीति' (2020) में मूल्य शिक्षा को शामिल किया है। यह एक सकारात्मक कदम है।
2. **परिवार की अक्षुण्ण शक्ति:** परिवार अभी भी भारतीय समाज की नींव है। यदि परिवारों में मानवीय मूल्य बनाए रखे जाएँ, तो समाज भी ठीक रहेगा। माता-पिता बच्चों को सिखा सकते हैं कि सफलता सिर्फ अंक या पैसा नहीं है; सफलता तो एक अच्छा इंसान बनना है।
3. **साहित्य और कला की भूमिका:** फिल्में, किताबें, संगीत, नाटक—ये सब मानवीय मूल्यों को जीवंत कर सकते हैं। अगर फिल्मों सदाचार को दिखाएँ, तो लोग प्रेरित होंगे। साहित्य में अगर उदात्त विचार हों, तो पाठकों का विकास होगा।
4. **डिजिटल माध्यम की सकारात्मक भूमिका:** इंटरनेट का उपयोग मानवीय मूल्यों को फैलाने के लिए भी हो सकता है। सोशल मीडिया पर सच्ची बातें, प्रेरणा और आशा की सामग्री साझा की जा सकती है। डिजिटल माध्यम को नकारात्मक के रूप में देखना गलत है; इसे सकारात्मक तरीके से उपयोग किया जा सकता है।
5. **सामुदायिक कार्य:** गाँवों में 'स्वयं सहायता समूह', 'ग्रामीण विकास' कार्यक्रम, और सामाजिक संगठन अच्छा काम कर रहे हैं। (उपाध्याय, 2018) ये संगठन मानवीय मूल्यों को व्यावहारिक रूप में लागू करते हैं।
6. **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान:** योग, ध्यान, आयुर्वेद जैसी भारतीय परंपराएँ विश्व में लोकप्रिय हो रही हैं। यह भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का एक सकारात्मक संकेत है।

14. निष्कर्ष

वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं आई है; बल्कि, विश्व की बढ़ती हुई समस्याओं के संदर्भ में, ये मूल्य और भी अधिक आवश्यक हो गए हैं। जब दुनिया भर में असमानता, हिंसा, सांप्रदायिक विभाजन और पर्यावरणीय संकट गहरा रहे हैं, तब सत्य, अहिंसा, न्याय, सहिष्णुता और सामूहिकता जैसे मानवीय मूल्य समाज-निर्माण के लिए अपरिहार्य हो गए हैं। भारतीय समाज आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव में आ गया है, परंतु वह परंपरा को पूरी तरह नहीं भूला है। यह संतुलन ही भारत की विशिष्टता है। परिवार अभी भी भारत में केंद्रीय संस्था है, शिक्षा के माध्यम से मूल्य अभी भी सिखाए जाते हैं, और सामूहिकता की भावना हालाँकि क्षीण, अभी भी जीवंत है। परंतु यह सब खतरे में है। उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद, डिजिटल अलगाववाद और धार्मिक कट्टरता ने युवा पीढ़ी को संदेहग्रस्त और अकेला बना दिया है। इसलिए भारतीय संस्कृति को पुनर्परिभाषित करना, मानवीय मूल्यों को समकालीन संदर्भों में समझना, और नई पीढ़ी को सिखाना कि तकनीकी विकास के साथ मानवीयता कैसे बनी रहती है - यह आवश्यकता न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्व के लिए है। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि यह परिवर्तन को स्वीकार करती है, परंतु अपनी आत्मा को नष्ट नहीं होने देती। वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्य सिर्फ भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक आलोकदर्शक हो सकते हैं - शर्त यह है कि हम उन्हें जीवन में अंगीकार करें।

Reference

- [1]. चौधुरी, एम. (2024). कल्चर एंड कल्चरल पॉलिसी इन राधाकमल मुकर्जी एंड इंडियन सोशियोलॉजी: टेक्स्ट इन कॉन्टेक्ट. सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 73(3), 259-277.
- [2]. घोष, बिस्वजीत. (2019). स्टडी ऑफ इंडियन सोसाइटी एंड कल्चर: मेथड्स एंड पर्सपेक्टिव्स. केरल सोशियोलॉजिस्ट, 47(1), 13.

- [3]. कुमार, र., & कठेरिया, ध. (2026). भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक: भगवान श्रीराम एवं रामायण. *इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च एंड रिव्यूज*, 4(4), 274-287.
- [4]. कुमारी, अंशु, & तिवारी, मनीष. (2025). द एंडियुरिंग लेगेसी ऑफ एम.एन. श्रीनिवास इन इंडियन सोशियोलॉजी: ब्रिजिंग अकेडेमिया एंड पब्लिक डिस्कॉर्स. *सोशियोलॉजिकल फोरम*, 41, 55-59.
- [5]. कुसुमाकर, ए. (2016). भारतीय संस्कृति के संरक्षण में शिक्षा की भूमिका. *शब्द-ब्रह्म*, 4(9), 70-72.
- [6]. जोशी, एस. (2009). भारतीय संस्कृति और शिक्षा. *मूल्य विमर्श*, 4(7), 22-25.
- [7]. मनीषा. (2018). संस्कृति की दृष्टि से भारत का वैश्विक प्रसार. *जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलर्ली रिसर्च इन अलाइड एजुकेशन*, 15(4), 202-207.
- [8]. मुखर्जी, डी.पी. (1958). दा सोर्स ऑफ इंडियन ट्रेडिशन. *एलाईड पब्लिकेशन*, बम्बई.
- [9]. प्रदीप कुमार. (2022). प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के विशेष संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन तथा समाज और परंपराओं में आधुनिकीकरण. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज*, 9(1), 34-37.
- [10]. शर्मा, आशुतोष. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्य: एक अध्ययन. *नॉलेजएबल रिसर्च*, 4(3), 103-109.
- [11]. शर्मा, सुमन. (2023). भारत की पारम्परिक सांस्कृतिक व्यवस्था और उसका वर्तमान विश्व पर प्रभाव. *शोध मंथन*, 14(3), 370-376.
- [12]. शुक्ला, सीमा, & पाण्डेय, आंचल. (2023). इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑन इंडियन टेक्नोलॉजी एंड कल्चर. *सोशल साइंस जर्नल फॉर एडवांस्ड रिसर्च*, 3(2), 21-29.
- [13]. सिंह, गीता. (2021). भारतीय संस्कृति का स्वरूप और इसकी प्रासंगिकता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च स्टडीज*, 5(46), 33-39.
- [14]. सुरयावंशी, खुशाल. (2012). योगेंद्र सिंहस थ्योरी ऑफ सोशल चेंज. *रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंसेज*, 3(1), 59-61.
- [15]. श्रीनिवास, एम.एन. (1966). सोशल चेंज इन माडर्न इंडिया. *एलाईड पब्लिकेशन*, बम्बई.
- [16]. श्रीवास्तव, शैल. (2026). भारतीय संस्कृति का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च-ग्रन्थालय*, 14(2एससीई), 135-138.
- [17]. उपाध्याय, के. एस. (2018). भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता. *गगनांचल (सांस्कृतिक मंथन)*, 8-14.
- [18]. वर्मा, ए. के. (2021). भारतीय संस्कृति और नई शिक्षा नीति. *स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमेनिटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज*, 9(45), 11218-11222.
- [19]. योगेन्द्र सिंह. (1986). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण. *रावत पब्लिकेशन*, नई दिल्ली.
- [20]. रॉबर्टसन, आर. (2000). ग्लोबलाइजेशन: सोशल थ्योरी एंड ग्लोबल कल्चर. *सेज पब्लिकेशंस लिमिटेड*.

Cite this Article:

डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा, " वैश्विक युग में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)*, ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 8, pp. 50-60, Aug 2026.
 Journal URL: <https://vijact.com>
 DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i8.83>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content of this article, including its accuracy, originality, and ethical compliance. The publisher and editors assume no liability for any errors, copyright issues, or consequences arising from its publication or use.